

ईमानदारी से एक वास्तविक संभावना के रूप में इसकी जांच करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। बाइबल उन लोगों को संदर्भित करती है जो ईमानदारी से उन बातों के विषय में सच्चाई की खोज करते हैं जो वे परमेश्वर के वचन से बिरीया के रूप में बेरेन्स हैं:

प्रेरितों के काम 17:10,11 और भाइयों ने तुरन्त पौलुस और सीलास को रात ही रात बिरीया में भेज दिया। ...ये तो थिस्सलुनीके के लोगों से अधिक भले थे, क्योंकि उन्होंने बड़ी तत्परता से वचन ग्रहण किया, और प्रति दिन पवित्र शास्त्रों में खोजते रहे कि ये बातें यों ही हैं, कि नहीं।

परमेश्वर के लोग केवल अपने हाथ की बर्खास्तगी की लहर के साथ बाइबल से जानकारी को अनदेखा नहीं करते हैं; बल्कि इसके बजाय वे ध्यान से सुनते हैं और फिर उन चीजों की जांच करते हैं जो वे बाइबल में सुन रहे हैं यह देखने के लिए कि वे सच हैं या नहीं।

बाइबल एक और प्रमुख आत्मिक न्याय को दर्ज करती है

लेकिन परमेश्वर के वे दो निर्णय ही सब कुछ नहीं हैं, हमारे लिए विचार करने के लिए एक और न्याय भी है: नए नियम की कलीसियाओं पर परमेश्वर का न्याय:

1 पतरस 4:17 क्योंकि वह समय आ पहुंचा है, कि पहले परमेश्वर के लोगों का न्याय किया जाए; और जब कि न्याय का आरम्भ हम ही से होगा तो उनका क्या अन्त होगा जो परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते?

परमेश्वर ने अपने वचन में हमें बहुत सी जानकारी दी है जो संसार की कलीसियाओं पर न्याय करने की उसकी अंतिम समय की योजना की ओर इशारा करती है। वह कलीसियाओं और कलीसियाओं पर अपने क्रोध के उंडेले जाने को दर्शाने के लिए एक प्याले के प्रतीक का भी उपयोग करता है:

यिर्मयाह 25:15-18 क्योंकि यहोवा यों कहता है... इस जलजलाहट की मदिरा का प्याला मेरे हाथ में ले, और उन सब जातियों को पिला, जिनके पास मैं तुझे भेजता हूँ। और वे पीकर घबरा जाएंगे, और पागल हो जाएंगे, क्योंकि मैं उनके बीच तलवार चलाऊँगा। तब मैंने यहोवा के हाथ से प्याला लिया, और उन सब जातियों को पिला दिया, जिनके पास यहोवा ने मुझे भेजा था: जिसके पास यहोवा ने मुझे भेजा है: अर्थात् यरूशलेम और यहूदा के नगरों को।

परमेश्वर पहले यरूशलेम (कलीसियाओं की एक आकृति) और फिर बाकी राष्ट्रीय (दुनिया की ओर इशारा करते हुए) को कटोरा देता है।

यिर्मयाह 25:29 क्योंकि देखो, मैं उस नगर पर जो मेरा कहलाता है, विपत्ति डालने पर हूँ; फिर क्या तुम निर्दोष ठहरोगे? तुम निर्दोष न ठहरोगे; क्योंकि मैं पृथ्वी के सब रहनेवालों पर तलवार चलाने पर हूँ, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।

परमेश्वर की भलाई और कृपा से, उसने हमें बताया है कि चर्च का युग समाप्त हो चुका है। चर्चों पर न्याय वर्ष 1988 में शुरू हुआ। उस समय परमेश्वर की आत्मा नए नियम के चर्चों से विदा हो गई, और तुरंत दुनिया के सभी चर्चों में सुसमाचार की रोशनी बुझ गई। और फिर भी इस बिंदु पर बाइबल की शिक्षा के बावजूद, नए नियम के चर्च इस भयानक सत्य से पूरी तरह से अप्रभावित रहते हैं।

उनके कई पादरियों और एल्डर्स ने उनके ऊपर न्याय के बारे में बाइबल की शिक्षा के बारे में सुना है, लेकिन वे इसे खारिज कर देते हैं और पूरी तरह से इसकी उपेक्षा करते हैं। लेकिन वे पवित्रशास्त्र की इतनी बड़ी शिक्षा को कैसे अनदेखा कर सकते हैं, खासकर ऐसे गंभीर बिंदु पर? वे इसे अनदेखा करने और इसे कुछ भी नहीं के रूप में खारिज करने में सक्षम हैं क्योंकि यह आध्यात्मिक क्षेत्र में पाया जाने वाला एक निर्णय है। परमेश्वर के आत्मा को उनके बीच में रहते हुए कभी भी देखा नहीं जा सकता था, और साथ ही जब एक बार उसने उन्हें छोड़ दिया तो उसे भी नहीं देखा जा सकता था।

वह अंधकार जो वर्तमान में दुनिया भर की सभी कलीसियाओं को घेरे हुए है, एक आत्मिक अंधकार है; इसे भौतिक दृष्टि और प्राकृतिक समझ से नहीं पहचाना जा सकता है। लेकिन परमेश्वर के लोग इन बातों को समझ, या आध्यात्मिक दृष्टि के आधार पर समझने और पहचानने में सक्षम हैं जो परमेश्वर ने उन्हें दिया है:

दानियेल 12:10 बहुतेरों को शुद्ध किया जाएगा, और श्वेत किया जाएगा, और परखा जाएगा; परन्तु दुष्ट दुष्टता करेंगे, और दुष्टोंमें से कोई समझ न सकेगा; परन्तु बुद्धिमान लोग समझेंगे।

परमेश्वर के चुने हुए लोगों ने कलीसियाओं पर न्याय की गंभीरता और वास्तविकता को सुना और समझा, इस तथ्य के बावजूद कि यह पूरी तरह से एक आत्मिक न्याय था।

सारांश

हमने अब बाइबल के तीन न्यायों की जाँच की है, और हमें कुछ उल्लेखनीय पाया है: इन तीन निर्णयों में से प्रत्येक को केवल आत्मिक स्वभाव के रूप में वर्णित किया जा सकता है। और हम छोटे, अज्ञात और बल्कि अस्पष्ट निर्णयों की बात नहीं कर रहे हैं, बल्कि बाइबल में दर्ज तीन सबसे प्रमुख निर्णयों की बात कर रहे हैं। हम अदन की वाटिका में मानव जाति पर परमेश्वर के न्याय से अधिक महत्वपूर्ण किसी भी चीज़ पर कैसे चर्चा कर सकते हैं: या, गतसमनी में मसीह पर परमेश्वर का न्याय: या, महान क्लेश की अवधि के दौरान नए नियम के कॉर्पोरेट चर्च पर परमेश्वर का न्याय?

वास्तव में, बाइबल में इन तीनों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण निर्णय का नाम देना असंभव होगा। यह हमें हमारे मुख्य प्रश्न की ओर वापस ले चलता है: क्या बाइबल आत्मिक न्याय करने की शिक्षा देती है? बाइबल की खोज करने के बाद हम आश्वासन के साथ कह सकते हैं, कि हाँ यह करता है! बाइबल वास्तव में सिखाती है कि परमेश्वर वर आत्मिक (नंगी आँखों के लिए अनदेखी) न्याय को मानव जाति के ऊपर उनके पाप के

कारण पहुँचाने के लिए लाता है।

लेकिन आज दुनिया में हम सभी के लिए बड़ा सवाल यह है: क्या भगवान ने 21 मई, 2011 से शुरू होने वाले आध्यात्मिक न्याय को पारित किया? बाइबल का उत्तर है: हाँ! यह कहने के लिए बाइबल आधारित औचित्य का एक अच्छा सौदा है कि एक आत्मिक न्याय उस दिन शुरू हुआ और इस वर्तमान समय तक जारी है।

सच्चाई तो यह है, कि बाइबल के प्रमाण इतने अधिक दृढ़ हैं कि हमें वास्तव में स्वयं से पूछने की आवश्यकता है: यह कैसे हो सकता है कि हमने पहले कभी भी आत्मिक न्याय को अन्तिम न्याय के लिए एक सम्भावना के रूप में नहीं माना था? यद्यपि, हमें ध्यान देना चाहिए कि बाइबल हमें सिखाती है कि परमेश्वर शारीरिक रूप से और शाब्दिक रूप से पृथ्वी के अस्तित्व के अंतिम दिन इस संसार को नष्ट कर देगा। हम पूरी तरह से इस ध्वनि बाइबिल शिक्षण के साथ सहमत हैं। लेकिन बाइबल यह भी सिखा रही है कि 21 मई, 2011 को आध्यात्मिक तरीके से जजमेंट डे के रूप में जाना जाने वाला समय शुरू हुआ।

यह आत्मिक न्याय एक निश्चित दिनों तक जारी रहेगा और फिर अन्त में, इस समयावधि के बिल्कुल अन्तिम दिन परमेश्वर का क्रोध शारीरिक रूप से स्वयं को प्रकट करेगा और इस सम्पूर्ण सृष्टि को प्रत्येक न बचाए हुए व्यक्ति के साथ पूरी तरह से नाश कर देगा। बाइबल बताती है कि आज जीवित प्रत्येक जीवित व्यक्ति ने उस समय की अवधि में प्रवेश किया है जिसे बाइबल न्याय के दिन के रूप में पहचानती है। इस समय हम सब न्याय के दिन में जी रहे हैं। भयानक रूप से, निम्नलिखित पवित्रशास्त्र अब पूरा हो रहा है:

Isaiah 24:17 हे पृथ्वी के निवासियों, भय, और गड्ढा, और फन्दा तुझ पर है।

बेशक यह भयानक सच्चाई हमें न्याय के इस वर्तमान समय के चरित्र के विषय में कई प्रश्नों के साथ छोड़ देती है।

और हम यह भी आश्चर्य करते हैं कि ऐसा कैसे है कि परमेश्वर के चुने हुए लोग अभी भी इस समय के दौरान पृथ्वी पर रह रहे हैं और शेष हैं। हम अपनी ट्रेक्ट श्रृंखला की अगली किस्त में इन सवालों के जवाब देने की कोशिश करेंगे, न्याय के दिन में रहना.

अधिक जानकारी के लिए यहां जाएं:

www.ebiblefellowship.org

www.ebible2.com

हमारे फेसबुक पेज पर जाएं:

www.facebook.com/ebiblefellowship

हमारे यूट्यूब चैनल पर भी जाएं:

www.youtube.com/ebiblefellowship1

आप को संदेश, प्रश्न या ईमेल टिप्पणियाँ भी भेज सकते हैं:

info@ebiblefellowship.org

**अथवा हमें इस पते पर लिखें: E Bible Fellowship,
P.O. Box 1393 Sharon Hill, PA 19079 USA**

आध्यात्मिक निर्णय

शुरू

मई 21, 2011

न्याय के दिन में जीना ट्रेक्ट श्रृंखला #1

21 मई, 2011 की तारीख न्याय के दिन के लिए सबसे प्रचारित तारीख थी जिसे दुनिया ने कभी देखा है। इसे होर्डिंग पर प्रचारित किया गया और बसों पर विज्ञापन दिया गया। यह संदेश कारों, बंपर स्टिकर, टी-शर्ट, साहित्य, पत्रिकाओं और अखबारों पर देखा गया। दुनिया भर के समाचार मीडिया ने भी सुसमाचार के चेतावनी संदेश को तुरही दिया कि वह तारीख न्याय दिवस होगी! दुनिया का अधिकांश, एक अर्थ में, भगवान के अंतिम निर्णय की प्रत्याशा में अपनी सामूहिक सांस पकड़ रहा था।

और फिर भी, (प्रतीत होता है) कुछ भी नहीं हुआ। चीजें वैसी नहीं हुईं जैसी सोचा गया था। मई 21, 2011 की तारीख के साथ दुनिया भर में भूकंप और भयानक परिस्थितियां नहीं थीं। इसके बजाय वह दिन आया और किसी अन्य दिन की तरह चला गया। बाहरी रूप से दिखाई देने वाला कुछ भी नहीं हुआ। दुनिया में कई लोगों ने, काफी राहत महसूस की, पूरे विचार का उपहास किया। "देखो," उन्होंने कहा, "यह सब मूर्खता थी। और वे अकेले नहीं थे, चर्चों में भी आनन्दित थे: "हम तुमसे कहा था कि कोई भी दिन और घड़ी नहीं जान सकता!"

हालाँकि, दुनिया और कलीसिया जिस बात को ध्यान में रखने में विफल रही, वह आत्मिक न्याय को पूरा करने की दिशा में परमेश्वर की प्रवृत्ति थी। एक आत्मिक निर्णय, किसी भी आत्मिक चीज़ की तरह, नहीं देखा जा सकता है। परिभाषा के अनुसार, कुछ आध्यात्मिक मानव आँखों के लिए अदृश्य है। उदाहरण के लिए, बाइबल घोषणा करती है कि परमेश्वर आत्मा है:

यूहन्ना 4:24 परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करनेवाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।

बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर एक आत्मिक प्राणी है। लेकिन चूंकि दुनिया उसे नहीं देख सकती है, और चूंकि दुनिया उसे छू नहीं सकती है, और चूंकि यह उसे अपनी इंद्रियों से नहीं पहचान सकती है, इसलिए दुनिया के तर्क के अनुसार भगवान मौजूद नहीं है। आध्यात्मिक चीजें दुनिया के लिए बस मौजूद नहीं हैं। लेकिन निश्चित रूप से भगवान मौजूद हैं। इस तथ्य के बावजूद कि उसे प्राकृतिक आँखों से नहीं देखा जा सकता है, वह अभी भी बिलकुल वास्तविक है। परमेश्वर के लोग इसे समझते हैं। हम यह भी समझते हैं कि बाइबल एक आत्मिक पुस्तक है। यह परमेश्वर वर की पुस्तक है, और क्योंकि वह आत्मा है, इसलिए हम बिल्कुल भी आश्चर्यचकित नहीं हैं कि बाइबल आत्मिक सत्य से भरी हुई है। परमेश्वर के लोग विश्वास की आँखों से विश्वास करते हैं जो विश्वासी को आध्यात्मिक

(अदृश्य) चीजें दिखाई देती हैं:

इब्रानियों 11:1 विश्वास आशा की पदार्थ वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।

क्योंकि संसार के अधिकांश लोग परमेश् वर के अस्तित्व का इन्कार करते हैं, क्योंकि वे उसे नहीं देख सकते हैं, इसलिए हमें आश्चर्य नहीं है कि परमेश् वर के अदृश्य या आत्मिक न्याय का विचार उनके लिए हास्यास्पद है। और फिर भी, बाइबल के विश्वासियों के रूप में हम वास्तव में उस बात में बिल्कुल भी दिलचस्पी या सरोकार नहीं रखते हैं जो संसार को हास्यास्पद या मूर्खतापूर्ण लगता है। हमारा सुसमाचार, हमारी पुस्तक बाइबल, हमारा उद्धारकर्ता यीशु मसीह संसार द्वारा मूर्ख माना जाता है: परमेश्वर की संतान को संदेह से परे साबित करना कि दुनिया आत्मिक चीजों के विषय में बेहद अंधी और अनभिज्ञ है। हम आध्यात्मिक मामलों में दुनिया से हमारी अगुवाई या दिशा नहीं लेते हैं। हमारे बारे में दुनिया की राय और हमारी मान्यताएं भगवान के बच्चे के लिए बिल्कुल भी महत्व नहीं रखती हैं। नहीं। परमेश्वर की सन्तान होने के नाते, हमारी एकमात्र चिन्ता यह है कि बाइबल क्या कहती है।

खैर, चलो वह सवाल पूछते हैं। आत्मिक न्याय दिवस के विचार के बारे में बाइबल क्या कहती है? क्या यह संभव है? क्या इस तरह के विचार के लिए बाइबल का कोई उदाहरण है? इन सवालों के जवाब देने के लिए हमें उत्तरों के लिए बाइबल की खोज करनी चाहिए। और जब हम ऐसा करते हैं तो ऐसा होता है कि हमें इस बिंदु के बारे में काफी अच्छी जानकारी मिल जाएगी।

अदन में पहला न्याय: एक आत्मिक न्याय

आइए उत्पत्ति की पुस्तक में अपनी खोज शुरू करें। आदम को बनाने के तुरंत बाद, परमेश्वर ने अदन की वाटिका में पाए जाने वाले पेड़ों में से एक के बारे में बहुत कड़ी चेतावनी दी।

उत्पत्ति 2:16 और यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को यह आज्ञा दी, कि तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है; पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।

बहुत से लोगों ने, यहाँ तक कि बहुत से लोग जो बाइबल से बिल्कुल भी परिचित नहीं हैं, निस्संदेह, इस पहली और एकमात्र व्यवस्था के बारे में सुना है जो नव सृजित मनुष्य को दी गई है। परमेश्वर ने मनुष्य को स्पष्ट रूप से कहा था कि वह उस एक विशेष वृक्ष के फल को न खाए। और परमेश्वर ने मनुष्य से यह भी कहा कि जिस दिन वह उस वृक्ष का फल खाएगा, उसी दिन वह निश्चित रूप से मर जाएगा। यह एक बहुत ही सीधा, सुस्पष्ट बयान था। निश्चित रूप से यदि आप या मैं उस समय उपस्थित होते और परमेश्वर की ओर से आने वाले इस कथन को सुना होता, तो हम पूरी तरह से समझ गए होते। उस वृक्ष का फल खाओ और तूम मर जाओ! और निश्चित रूप से हम सभी जानते हैं कि क्या हुआ। संसार का दुखद इतिहास इस बात की गवाही देता है कि आदम और हव्वा ने परमेश्वर की आज्ञा तोड़ी। उन्होंने जल्द ही उस पेड़ का फल खा

लिया जिसे परमेश्वर ने उन्हें खाने से मना किया था।

उत्पत्ति 3:3-6 परन्तु जो वृक्ष बाटिका के बीच में था, उसके विषय में परमेश्वर ने कहा, ‘तुम उसको न खाना, और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे।’ और सर्प ने स्त्री से कहा, ‘तुम निश्चय न मरोगे, क्योंकि परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।’ और जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि की इच्छा करनेवाला वृक्ष है, तब उसने उसमें से तोड़कर खाया, और अपने पति को भी दिया; और उसने भी खाया।

आदम और हव्वा ने परमेश्वर द्वारा दिए गए एकमात्र कानून का उल्लंघन किया। उन्होंने निषिद्ध वृक्ष से खाया। फिर भी वे उस दिन नहीं मरे। यदि आप उत्पत्ति अध्याय 3 में दर्ज इतिहास का पूरा विवरण पढ़ें, तो आप न तो आदम और न ही उसकी पत्नी हव्वा को उस वृक्ष से खाने के बाद गिरते और मरते हुए पाएंगे। वास्तव में, बाइबल हव्वा को जन्म देने, अपने एक बच्चे होना (हाबिल) को मारने और फिर और बच्चों को जन्म देने के बारे में बताती है: ये सब निषिद्ध वृक्ष से खाने के बाद हुआ। बाइबल यह भी बताती है कि आदम उसके बाद सैकड़ों वर्षों तक जीवित रहा; आदम 930 वर्ष की आयु तक नहीं मरा।

उत्पत्ति 5:3,4 और एडम एक रहता था एक सौ तीस वर्ष का हुआ, तब उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ... और उसने उसका नाम शेत रखा। शेत के जन्म के पश्चात् आदम आठ सौ वर्ष जीवित रहा।

लेकिन यह कैसे संभव है कि आदम उस पेड़ के फल खाने के बाद सैकड़ों वर्षों तक जीवित रहा? क्या यह संभव है कि परमेश्वर किसी तरह गलत था? हम यह सोचने की हिम्मत नहीं करते कि उसने (भगवान) झूठ बोला था। नहीं। इनमें से कोई भी बात एक विकल्प नहीं है: परमेश् वर कभी गलत नहीं होता है और उसके लिए झूठ बोलना असम्भव है। फिर हम इसे कैसे समझा सकते हैं? इसका उत्तर तब मिलता है जब हम बाइबल को आत्मिक समझ की दृष्टि से देखते हैं। अर्थात्, हमें इस संभावना पर विचार करना चाहिए कि परमेश्वर उसी दिन मानव जाति के लिए मृत्यु को लाया जिस दिन उसने कहा था कि वह लाएगा; लेकिन यह कि उस दिन मनुष्य की मृत्यु शारीरिक नहीं थी, बल्कि एक आत्मिक मृत्यु थी:

इफिसियों 2:1 और उसने तुम्हें जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे।

कुलुस्सियों 2:13 और तुम जो अपने पापों और अपने शरीर की खतनारहित दशा के कारण मरे हुए थे, उसने उसके साथ जिलाकर तुम्हारे सब अपराध क्षमा किए हैं;

इन पदों के द्वारा हम सीखते हैं कि मनुष्य अपने पापों में मरा। बाइबल बताती है कि ईसान अपनी आत्मा के अस्तित्व में मरा। पाप में गिरने से पहले मनुष्य शरीर और आत्मा दोनों में जीवित था। उसका परमेश्वर के साथ संवाद था। परमेश्वर और मानव जाति के बीच एक घनिष्ठ संबंध

मौजूद था। लेकिन एक बार मनुष्य ने पाप किया कि परमेश्वर और मनुष्य के बीच आत्मिक संबंध टूट गया: वह उसी दिन उसकी आत्मा में मर गया। यही कारण है कि जब परमेश्वर ने उद्धार के दिन लोगों को बचाया तो यह आवश्यक था कि वे अपनी आत्मा में नया जन्म लें। उद्धार पापी की मृत आत्मा का पुन: जन्म था। हमारे अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण बात यह है कि परमेश्वर ने बस इतना कहा: "जिस दिन तुम उसका फल खाओगे, उसी दिन तुम मर जाओगे।" परमेश्वर ने यह स्पष्ट किए बिना कहा कि मनुष्य किस प्रकार की मृत्यु मरेगा। उन्होंने पहले से यह प्रकट नहीं किया कि उनका मतलब आत्मा में मृत्यु से था न कि भौतिक शरीर में मृत्यु।

इसलिए हम देखते हैं कि बाइबल में दर्ज किया गया पहला बड़ा न्याय वास्तव में एक आध्यात्मिक न्याय था। यह आत्मिक था, क्योंकि उस दिन कोई भी आदम और हव्वा की आत्मा को मरते नहीं देख सकता था। वास्तव में, शैतान दावा कर सकता था कि वह सही था और उसने कहा था, "देखो, मैंने तुमसे कहा था कि तुम नहीं मरोगे। देखो! आपको कुछ नहीं हुआ। आप अभी भी शारीरिक रूप से बहुत जीवित हैं। और कोई भी बाहरी पर्यवेक्षक उससे सहमत होता। हाँ, वास्तव में, जैसा परमेश्वर ने कहा था वैसा कुछ भी नहीं हुआ। और फिर भी, यह विचार पूरी तरह से गलत होता। कुछ तो हुआ ही। कुछ बहुत ही वास्तविक और कुछ बहुत ही गंभीर घटित हुआ, यद्यपि आध्यात्मिक क्षेत्र में। परमेश्वर का क्रोध उन पर पड़ा और वे अपने प्राण के अस्तित्व में मर गए।

"ठीक है," कुछ लोग कह सकते हैं, "हम इस विचार की अनुमति देंगे कि परमेश्वर ने आदम और हव्वा पर आध्यात्मिक न्याय लाया था: लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि 21 मई, 2011 एक आध्यात्मिक निर्णय था। हाँ यह सच है, लेकिन इस समय हम यह साबित करने की कोशिश नहीं कर रहे हैं कि 21 मई, 2011, जजमेंट डे की शुरूआत थी।

अभी हमारे सामने सवाल यह है: क्या यह संभव है कि परमेश्वर दुनिया के न्याय के अंतिम दिन को आध्यात्मिक तरीके से पारित कर सकता है? एक बार जब हम इस प्रश्न का उत्तर स्थापित कर लेते हैं, तो हम बाइबल के उत्कृष्ट प्रमाणों के अच्छे सौदे पर चर्चा करने के लिए आगे बढ़ सकते हैं जो 21 मई, 2011 को न्याय दिवस के रूप में इंगित करना जारी रखता है। हालांकि अभी के लिए, आइए फिर से बाइबल की ओर मुड़ें और देखें कि क्या हम आध्यात्मिक निर्णयों के बारे में और कुछ खोज सकते हैं।

एक कप का प्रतीक

बाइबल अक्सर प्याले की आकृति का उपयोग करके परमेश्वर के क्रोध को सन्दर्भित करती है।

भजन संहिता 11:6 वह दुष्टों पर फन्दे, आग और गन्धक गंधक, और भयंकर भयानक तूफ़ान: उनके कटोरे का भाग यही होगा।

ध्यान दें कि परमेश्वर दुष्टों पर आग और गंधक के साथ-साथ “जाल” बरसाना चाहता है। आप शायद कल्पना कर सकते हैं कि न्याय के भयानक दिन पर बचाए न गए मानवजाति पर वास्तविक आग और गंधक बरसेगी, लेकिन जाल? यह जाल है। क्या कोई वास्तव में विश्वास

करता है कि पूरी धरती पर आकाश से जाल या पिंजरे गिरने वाले हैं? बिल्कुल नहीं! परमेश्वर ने “जाल” शब्द को हमें यह समझने में मदद करने के लिए जोड़ा कि दुनिया में बचाए न गए सभी लोगों को दिया जाने वाला क्रोध का प्याला एक आध्यात्मिक प्याला होगा। यह एक शाब्दिक नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक न्याय है। इसीलिए बाइबल यह भी कहती है कि अंत के समय में पूरी दुनिया जाल में फँस जाएगी:

लूका 21:34,35 इसलिये सावधान रहो, ऐसा न हो कि तुम्हारे मन खुमार और मतवालेपन, और इस जीवन की चिन्ताओं से सुस्त हो जाएं, और वह दिन तुम पर अचानक आ पड़े। क्योंकि वह सारी पृथ्वी के सब रहनेवालों पर फन्दे के समान आ पड़ेगा।

मई 21, 2011 को, जैसे ही दुनिया आनन्दित हुई और चिल्लाई (उनके साथ चर्च) "कुछ नहीं हुआ। उसी समय परमेश्वर ने पृथ्वी के सारे बिना बचाये लोगों को फँसा लिया (कलीसियाओं के अंदर और बाहर) और उन्हें अपने क्रोध का कटोरा पीने के लिये देना पुरू किया।

दूसरा आत्मिक न्याय: मसीह परमेश्वर के क्रोध के प्याले से पीता है

बाइबल हमें यह भी प्रकट करती है कि यीशु मसीह ने अपने लोगों के पापों को अपने ऊपर ले लिया, और यह कि परमेश्वर ने मसीह पर अपना क्रोध उंडेला: उनके स्थान पर उसे दंडित किया। प्रभु यीशु ने अपने गौरवशाली प्रायश्चित कार्य को प्रदर्शित करने और दिखाने के लिए मानव जाति में प्रवेश किया। गतसमनी के बगीचे में रहते हुए उसने यह प्रदर्शन करते हुए परमेश्वर के क्रोध का अनुभव करना शुरू किया:

मत्ती 26:39,42 फिर वह थोड़ा आगे गया, और मुंह के बल गिरकर प्रार्थना करने लगा, कि हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा मुझ से टल जाए; तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो। 42 फिर वह दूसरी बार गया, और यह प्रार्थना करने लगा, कि हे मेरे पिता, यदि यह कटोरा मेरे पीए बिना नहीं टल सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो।

यीशु ने परमेश्वर के क्रोध के कटोरे में से पिया; लेकिन इसका क्या मतलब था? क्या उसे नष्ट करने के लिए स्वर्ग से आग के बोल्ट नीचे आए? नहीं। ऐसा कुछ भी नहीं था। हकीकत में, गतसमनी के बगीचे में किसी भी बाहरी पर्यवेक्षक ने केवल एक दु:खी और शोकित यीशु को देखा होगा, और कुछ नहीं। परमेश्वर के क्रोध के कोई भी बाहरी संकेत नहीं थे। दूसरे शब्दों में, गतसमनी की वाटिका में रहते हुए मसीह का परमेश्वर के क्रोध के कटोरे को पीना एक शारीरिक न्याय नहीं था, अपितु एक आत्मिक न्याय था। आत्मिक क्षेत्र में दण्ड का अनुभव करने के कारण यीशु ने बहुत दु:ख उठाया।

इसका अर्थ यह है कि, अब बाइबल के दो महत्वपूर्ण निर्णय प्रकृति में पूरी तरह से आत्मिक थे: अदन की वाटिका में आदम और हव्वा पर न्याय, और गतसमनी के बगीचे में मसीह पर परमेश्वर का न्याय। ये दो निर्णय अपने आप में आध्यात्मिक तरीके से होने वाले जजमेंट डे के विचार का समर्थन करने के लिए पर्याप्त सबूत प्रस्तुत करते हैं; कम से कम बाइबल के इन उदाहरणों के अस्तित्व को परमेश्वर के ईमानदार बच्चे को